१

हनुमन्त०
पु०

श्रीगणेशायनमः ॐ अस्यश्रीअनन्तघोरप्रलयज्वालाग्निरौ
द्रस्य वीरहनुमान् असाध्यसाधन अघोरास्त्र [illegible] मंत्र
स्य ईश्वरऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीरामलक्ष्म[illegible] तो देवता
नानाछन्दांसि सौं वीजं अंजनीसनुरितिशक्तिः वायुपु
त्र इति कीलकं श्रीहनुमत्प्रसादसिद्ध्यर्थं स्वर्गलोकम
१ त्युलोकपाताललोकवश्यार्थं नव [illegible] खंडपृथ्वीवश्यार्थं १
मम ऋद्धिसिद्धितत्वपदसिद्ध्यर्थं जपेविनियोगः ॐ नमो
भगवते दावानलकालाग्नि हनुमन्नाय ते जोचितानंधव
जीकृतवज्रदेह वज्र ... वज्रतुण्ड ... नख वज्रमुख

अभिमन्त्र १

राहार वायुवेग मनो वेग श्रीरामतारकपरब्रह्मविश्वरूपनिरञ्जन
लक्ष्मण प्राण प्रतिष्ठान न्दकरस्थल जलाग्निगर्भ मम मनो भे
दि भेदि सर्वशत्रु छेदि छेदि मम वैरीन् खादय खादय पंजीवन
पर्वतोत्पाटनाय डाकिनीशाकिनी विध्वंसनी सुग्रीव सखिक
रणा निष्कलंकित कुमार ब्रह्मचारी दिगंबर दुष्ट सर्वपाप
ग्रह कुमार ग्रह सर्व छेदय छेदय भेदय भेदय भिंदि भिंदि खाद
य खादय कंटकान् ताडय ताडय मारय मारय शोषय शोषय ज्वा
लय ज्वालय हरय हरय देवदत्त नाशय नाशय अतिशोषय शो
षय मम सर्वरक्षा ॐ नमो भगवते श्रीप्रतापहनुमन्ताय
महावीराय सर्वदुःख विनाशाय ग्रहमण्डल भूतमण्डल

वज्रबाहु वज्ररोम वज्रनेत्र वज्रदन्त वज्रकरकमलमात्मक
रायभीमकरपिंगलाक्ष उग्रप्रलयकालरौद्रवीरभद्रावता
रसर्वसात्वभेरवदोर्दण्ड लंकापुरीदहन उदधिलंघन
दशग्रीव कृतांतसंत विश्वास ईश्वरपुत्र वायुसुत अंजनीगर्भसंभूत उ
दय भास्करबिंब नरदेवदानव ऋषिमुनिवंद्य बलीसापुधपा
शुपतास्त्र ब्रह्मास्त्र वैष्णवास्त्र नारायणास्त्र कालशक्ति
कालदंड कालपाश अघोरास्त्र निवारणाय नारा
यणास्त्रम अप सर्वशक्ति ममात्मकराय परविद्या निवार
णाय अग्निदीप्ताय अथर्ववेदसिद्धि स्थिरकालनि

हनु॰ मं॰
दुर्ग॰

महानागपाशमहानागान् कालपाशविषनिर्विषं कुरु कुरु स्वा
हा ॐ पातालगरुड हनुमन्त भैरव वनमद गज सिंह इन्द्रपा
शबंधछेदय छेदय प्रलयमानुत कालाग्नि हनुमन्त पं खला
वंध विमोक्षय विमोक्षय सर्व[illegible] वाल ग्रह छेदय छेदय सर्व
कार्यसाधय साधय मम प्रसन्न श्रीरामदूत सिंह भैरव स्वरूप
प ॐ ह्रां ह्रीं स्रौं भ्रौं ब्रौं श्रौं क्रौं क्रिं क्रां क्रैं हं हीं हुं हिं हैं हौं खं खं
खं जय जय मारण मोहन घूर्णि घूर्णि दमय दमय मारय मा
रय वानराय वानराय खैं खैं खैं हुं फट् स्वाहा भ्रमय भ्रमय
चल चल कुरु कुरु हं सं हं सम दम दुष्ट दुष्ट ग्रह ग्रह प्रज्वाल
य मडाय मडाय नेत्रः सहस्रलोप महा त्रिशूल डमरु

3

प्रेतमंडलपिशाचमराल उच्चाटय २ अनन्तर्भवादिकज्वरमहे
श्वरज्वर विष्णुज्वर विषमज्वर शीतज्वर वातज्वर पित्तज्वर ऐ
काहिकं व्याहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं अर्द्धमासिकं षण्मासि
कं संवत्सरादिकं वातपित्तश्लेष्मसंनिपातकं अंतरगत अ
पस्मारिकं भ्रामिकं छेदय छेदय भेदय भेदय भिंदि भिंदि ❀
नमो भगवते चिंतामणि हनुमंत अंगशूलं अशिरशूल उगुद
शूल कटिशूल जानुशूल जंघशूल पादशूल पित्तशूल वायु
शूल स्तनशूल सर्वशूल निर्मूलय दानवदैत्य कामिनी वेता:
ल ब्रह्मराक्षस कोलाहल नागपाश अनंत वासुकि तक्षक
करकोटक कालिंग पद्मक कुमुद ज्वलस्पर्श नागपाश

हनुमत० क०
७

रूपाय रक्तादशानंद्रावनाय रुद्रमार्कतिजाय नृपोदृपातीलमुखाय वी
रहनुमनते नमो नमः हनुमते ओंकार अतिलिंह वाघायपिरो
नमः राजमुखवंधनाय नमः वलमुखवंधनाय नमः नरमुख
जिह्वा व्याघ्र सर्व वृश्चिक अग्नि ज्वाला विषनिरंगंद सर्वजन
वैरिमुखवंधन व्याघ्रमुखवंधनाय वीर हनुमते ईश्वराव
तार वायुनन्दन अंजनीसुतवं पुसत्यवंधु श्रीरामचन्द्र उवा
च महादेव उवाच वीरभद्र उवाच त्रिभुवनं पंचपदी नरः ॐ
४ ह्रां ह्रीं ह्रुं अस्य पंह्रीं ह्रुं ध्रीं त्रियोमें में श्री हुं हुं खां खां सर्वख
विश्व खः शत्रुणं वृहस्पतः सर्वजनसिद्धसयम लंलं श्रीं ल्हीं
ल्हीं ल्हें नमस्तं भय रअंजय रद्विपर ह्रीं ह्रीं ह्रीं मम सर्व ह्रीं ह्रीं सीगर
ह्रीं लं सर्वपस सर्व सिद्धि सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा इति श्री वृत्र

कालमृत्युकपालखट्वांगदंडधारय भ्रमय वायुं बंधाय सर्वग्रहं बंधाय
वीरार वं घापय भूतनाथ २ आवर्निप आघांतर भूपराणाय परपंत्रप
रतंत्र भूतसहस्र कोटि रिपु भेदय भेदय अग्नि भेदय भेदय अनन्ता
गिनदुष्ट नागानां द्वादशाकुलवृश्चिकानां एकादशाकुललूतानां
5 हन हन वज्रतुण्ड उग्रार उच्चाटनाय २ मारणमोहनवशीक
रण स्तंभन जंभरां आकर्षण उच्चाटन स्मिलनविद्वेषन पु
षतर्क मर्कं वं घपवधय कुमार पाद त्रिहर वामोग्रह मूर्तय
यामथामिनेति पूर्वप्राकाय सर्वापुष्पानि स्वाहा ॐ अपसर्पा
प धारय ॐ लंलंलं ध्रं धो निस्वाहा हुं हुं ठंठंठं लंलं देवदत्तादिग
वर अष्टभैरवं ग्रहणगंधराय नाटकेनव ग्रास्ते ग्रामापदशाविल्